भारत की कम्युनिस्ट पार्टी
केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

08/12/2014

भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में बनी राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन सरकार द्वारा अपनाई जा रही ब्राह्मणीय हिंदू फासिवादी नीतियों का नतीजा ही कासलपाडा एम्बुश!

PLGA के वीर योद्धाओं, कमाण्डरों को क्रांतिकारी अभिवादन!!

2 दिसंबर जनमुक्ति छापामार सेना (PLGA) का स्थापना दिन है। समुचे देश भर के माओवादी क्रांतिकारी इलाकों में PLGA अपना 14 वां स्थापना दिन जनता के साथ मनाने की तैयारी चल रही थी। तो दुसरी तरफ माओवादी संघर्ष इलाकों में लाखों की तादात में तैनात किए गए पुलिस कमाण्डों एवं अर्धसैनिक बल PLGA सप्ताह में बाधा डालने के लिए अपने ''घेराव करो और खोजों'' अभियान को चला रहे थे। जिसके तहत गावों पर हमले करना, जनता को गिरफ्तार करना, क्रूर यातनाएं देना, महिलाओं पर अत्याचार करना तथा सड़क एवं रास्तों पर तलाशी अभियान जारी थे। ऐसी परिस्थिति में दण्डकराण्य के दक्षिण बस्तर डिविजन के (सुकमा जिला) चिंतागुफा एरिया के कासलपाडा में हमारे बहादूर PLGA गुरिल्लाओं ने 1 दिसंबर को किए साहसिक-कार्यनीतिक प्रतिहमले में 223 बटलियन के जवानों को धूल चटाया जिसमें 14 जवान मारे गये और 15 जवान घायल हुए। साथ ही कोब्रा जवान दुम दबाकर भाग निकले। हमलें में मारे गये CRPF के जवानों के हथियारों को हमारे PLGA ने जप्त कीए है। उसका विवरण इस प्रकार है - AK47-7, UBGL-3, INSAS (LMG)-3, SLR-1 और कुछ सैनिकी सामग्री गुरिल्ला अपने साथ ले जाने में कामयाब रहे। समुचे क्रांतिकारी आंदोलन को नेस्तानाबुद करने के मकसद से ही पिछले 5 सालों से चल रहे ऑपरेशन ग्रीन हंट के हमलों को तेज करते हुए केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा अपनाई जा रही नीतियों के पृष्ठभूमी में कासलपाडा एम्बुश को सफल किए PLGA के गुरिल्लाओं एवं कमाण्डरों को हमारी केन्द्रीय कमेटी क्रांतिकारी अभिवादन पेश कर रही है। लोकसभा चुनाव में बहुमत हासिल कर BJP के नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में NDA सत्ता की बागडोर संभालने के बाद हमारे PLGA द्वारा किए एम्बुश को ऐतिहासिक महत्व है। मारे गये जवानों के लाशों के साथ हमारे PLGA सैनिकों द्वारा किए गए तथाकथित बदसलूकी भरे व्यवहार को मिडिया द्वारा किए जा रहे प्रचार को हमारी पार्टी तीव्र भर्त्सना करती है। दरअसल, उक्त हीन संस्कृती फासिवादी शासकों द्वारा अपने बलों में किस प्रकार भरी जा रही है, यह तो गडचिरोलि के मेड्री, दोबूर जैसी कई घटनाओं को लेकर बनाए गए चित्रफित (विडियो) देखने से उनकी असलियत जनता समझ जाएगी।

केंन्द्र में भाजपा के नेतृत्व वाली NDA की सत्ता आने के तुरंत बाद ही गृहमंत्री बने राजनाथ सिंग ने छत्तीसगड के बस्तर संभाग के लिए 10 अतिरिक्त बटालियन को भेजे। इनमें से अधिक बटालियनों को सुकमा, दंतेवाडा, बीजापूर आदी जिलों में ही तैनात किए है। नरेंद्र मोदी सरकार खुले तौर पर अपना रही

देशद्रोही नीतियों के तहत बस्तर पहुंचे सभी बल यहाँ के खदान क्षेत्रों में ही अपना डेरा जमाए है। रावघाट रेल लाईन का निर्माण समेत कई क्षेत्रों में मौजूद खदानों की खुदाई का काम शुरू करने के लिए जोरों से प्रयास जारी है। बस्तर संभाग के दंतेवाडा, सुकमा, बीजापूर, नारायणपुर, बस्तर, कोण्डागांव और कांकेर जिले एंव राजनांदगांव, दुर्ग जिलों के साथ महाराष्ट्र के गडचिरोलि व गोंदिया जिलों में तमाम पुलिस एवं अर्धसैनिक बलों द्वारा चलाये जा रहे फासिवादी ऑपरेशन ग्रीन हंट के बर्बर दमन नीतियों से समुचा दण्डकारण्य उबल रहा है। सुकमा, दंतेवाडा एवं बीजापूर जिलों के ग्रामीण इलाके में छत्तीसगड सहित पडोसी राज्यों के बल बिना किसी रूकावट के लगातार हमले कर है। छत्तीसगड बलों के साथ महाराष्ट्र के C-60 एवं आंध्रप्रदेश के ग्रे-हाऊण्ड्स संयुक्त हमले करते हुए जनता में दहशत फैला रहे है। खदानों की खुदाई, प्राकुतिक संसाधनों का दोहन के लक्ष्य को हासिल करने के लिए ही माओवादी आंदोलन को नेस्तानाबूद करने सुरक्षा बल तमाम जंगलों की छानबिन कर रहे है। बस्तर संभाग के आय.जी. एस.आर.पी. कल्लूरी के नेतृत्व में चल रहे 'घेराव करो और खोजों' कार्रवाई से स्त्री-पुरूष सहित बच्चों व वृद्धो में भी भय निर्माण कर रहे है। ब्राह्मणी हिदू फासिवादी ताकतों के सत्ता में आने के बाद क्रांतिकारीयों के सिरों पर पहले से घोषित इनामों को कई गुणा और बढ़ाया गया है। क्रांतिकारी ताकतों को लुभाने के लिए नई योजनाओं के साथ कई प्रलोभनों को भी फैला रहे है। क्रांतिकारी इलाकों मे अत्यंत साधारण जनता को गिरफ्तार कर इनामी नक्सली के रूप में पेश किया जा रहा है। माओवादीयों के बड़े पैमाने पर आत्मसर्मपण की झूठी कहानियों का प्रचार करने में बस्तर के आय.जी. कल्लूरी ने गोबेल्स को भी पछाड दिया है। उक्त खोखले एवं मनगढ़ंत आत्मसमर्पण करने की कहानियों को बुद्धिजीवी भी बड़े पैमाने पर पर्दाफाश कर रहे है। तो दूसरी तरफ पुलिसी अत्याचारों के विरोध में हजारों की संख्या में जनता सडकों, पर उतरने के लिए मजबूर हो रही है। अक्तुबर 2014 को भैरमगड एरिया के पोटेगांव के पास 3 महिला मड़काम रामबत्ती, जमली व लक्ष्मी की हत्या की और उसी एरिया के नेमेड गांव की सामबत्ती पर पुलिस द्वारा पाशविक अत्याचार कर उसकी हत्या के विरोध में बड़े पैमाने पर जनता एकत्रित होकर विरोध रॅली निकाल कर दोषी पुलिसों को सजा देने की मांग किए है। अपने गांववालों को अवैध रूप से गिरफ्तार कर जेल डालने के विरोध में हजारों आदिवासी स्त्री-पुरूष मार्च-2014 को दंतेवाडा जेल के सामने धरना दे चुके है। जुलाई माह में कोण्टा क्षेत्र के पिढ़मेल गांव के हिडमा, रामुम के निवासी वेटी हडमे की हत्या की गयी थी। अगस्त में जग्गवरम में पोडियम गंगा की हत्या की गयी थी। कोतागुडा के निवासी दोडी भीमा की हत्या की गयी। बीजापुर जिले के डुमरी पालनार ग्रामीणों पर पुलिस द्वारा किए गए अंधाधूंद गोलीबारी में कारम आयतु की मृत्यु हुई। सितम्बर 30 से अक्तुबर 2 तक बीजापूर, सुकमा, दंतेवाडा जिलों के ग्रामीण इलाकों में पुलिसों ने आतंक मचाया। मुरंगा गांव के कोरसा आयतु को पकड कर मार डाला। इसी बिच गडचिरोलि जिले के विकासपल्ली गांव के युवा किसान बिजू कोला को झुठी मुठभेड में मार डाला। इन सभी निहत्थे आदिवासियों को माओवादी कहकर पुलिस प्रचार कर रही है। दण्डकारण्य की संघर्षशील जनता इन तमाम हत्याओं का तीव्र विरोध करते हुए पुलिस के नृशंसता को प्रकट कर रही है। खदानों की खुदाई, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन को लेकर गंभीर समस्याओं का सामना कर रही जनता हजारों की संख्या में 10 अक्तुबर को ''चलो किरंदुला'' रॅली निकाले है। दिन-ब-दिन पुलिस द्वारा बढ़ाते जा रहे तथाकथित आत्मसर्मपण, आतंकी हमले एवं अत्याचारों के विरोध मे हमारे DK-SZC द्वारा 8 नवंबर को 'दण्डकारणय बंद' का आह्वान कर चूंकी है। यह तो सब जानते है कि उस बंद में संघर्षशील जनता लडाकु संकल्प से बड़े पैमाने पर हिस्सा लेकर उसे सफल किये है। पुलिस एवं अर्धसैनिक बलों के हमलों के बिच में जिंदगी एक युद्ध के रूप में तब्दील हो रहे जगह की जनता के लिए विद्रोही जंग छेडना अनिवार्य हो रहा है।

आर.एस.एस. के अधिपत्यवाली NDA का सत्ता के रूप में ब्राह्मणीय हिंदू फासिवादी शक्तियां दिल्ली की गद्दी पर बैठने के तुरंत बाद से ही छत्तीसगड़ राज्य में हिंदू धर्मोन्मादी ताकतों की गतिविधियों में काफी इजाफा हुआ है। राज्य में पिछले 12 सालों से सत्ता में रह रही भाजपा सरकार खुले तौर पर उनके समर्थन में उतरे है। स्थानीय सांसद दिनेश कश्यप के नेतृत्व में बस्तर में चल रहे ''घर वापसी'' अभियान नामक हमले से जनता काफी परेशान हो रही है। स्कुलों में हिंदू प्रार्थनाएं, अंधधार्मिक शक्तियां खुलेआम पूरे सप्ताह हिंदू देवी-देवताओं की पुजापाठ, आदिवासियों के भगवानों का अपमान करना आदी जैसे विषयों के चरम में धर्मपरिर्वन हो रहा है। देशभर में मुस्लिमों पर लगातार हमले बढ़ रहे है, दलितों की हत्याए की जा रही है, मजदूर कानूनों को मालिको के पक्ष में बदल दिया गया है। संसद में और संसद के बाहर भी खुद सरकार ही भारत के संविधान की धज्जीयां उडा रही है।

मोदी सरकार बड़ी आक्रमकता से LPG एजेंडे को आगे बढ़ाने से देश पर नव-उदारवाद की पकड़ और भी मजबूत हो रही है। इसको राष्ट्रवाद मुखौटे के पिछे छुपाने की कोशिशे चल रही है। संघ परिवार के राष्ट्रवादी मुखौटे की आड़ में मोदी सरकार देश को थोक में बेचने की नीतियों को आक्रमक रूप से लागू कर रही है। मोदी छाप-विकास एजेंडा को लागू होने से बड़े पैमाने पर विस्थापन की समस्या उत्पन्न हो रही है; जिससे आदिवसियों के अस्तित्व पर ही खतरा मंडरा रहा है। इन तमाम परिस्थितियों को दृढता से सामना कर रही जनता पर भारत के फासिवादी शासक वर्ग द्वारा चलाये जा रहे ग्रीन हंट ऑपरेशन के नए चरण की शुरूवात की गई है। (कासलपाडा हमले के तुरंत बाद केंन्द्रीय गृहमंत्री फैसला कर 11,000 अतिरिक्त बल बस्तर के जंगलो में तैनात करने के लिए भेज रहे है। पहले से हजारों की संख्या में मौजूद बल के साथ और अतिरिक्त बलों के शामिल होने से आदिवासी जनता के रोजमर्रा की जिंदगी में और भी तकलीफे बढ़ेंगी)

जनता के पक्ष में खड़ी PLGA बड़े हौसलों और साहस के साथ ऑपरेशन ग्रीन हंट के विरोध में लड़ रही है; और उसी के तहत तोंगपाले, मुरमुरियां और ताजा कासलपाडा उसी की एक और कड़ी है। ब्राह्मणीय हिंदू फासिवाद खतरे के विरोध में हमारी पार्टी के नेतृत्व में दृढ़ता से लड़ रही क्रांतिकारी जनता एवं उनकी सेना PLGA के समर्थन में छात्र, बुद्धिजीवी, शिक्षक, कर्मचारी, जनवादी प्रमीयों, पत्रकार एवं मिडिया कर्मी, लेखक, कलाकार, पर्यावरणविद तथा आदिवासियों के हितैषीयों से खड़ा रहने की हम अपील कर रहे है। तथा, देश में अपनी न्यायपुर्ण समस्याओं पर संघर्ष कर रही कई सामाजिक तबकों की जनता को आतंकवादी घोषित कर, दबाने की बात कर रहे फासिवादी ताकतों को लडाकु जनसंघर्ष एवं जनयुद्ध को तेज करके सबक सिखाने की अपील करते है। ब्राह्मणीय हिंदू फासिवादी ताकतों को आज हम एक होकर मुकाबला नहीं करने से हम हमारे प्यारे भारत देश को नहीं बचा पायेंगे।

Abhay

(अभय)

प्रवक्ता, केंद्रीय कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)